महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का आयोजन

मुंबई विश्वविद्यालय में चॉईस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम कार्यशाला का उद्घाटन

समानता, सक्षमता और उत्कृष्टता के लिए सीबीसीएस आवश्यक –प्रो. देवराज

मुंबई : शिक्षा में समानता, सक्षमता और उत्कृष्टता लाने के लिए चॉईस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम आवश्यक है. सभी केंद्रीय और राज्य विश्वविद्यालय को चाहिए कि वे अपने पाठयक्रममे इस प्रणाली को लागू कर छात्रों को अधिक से अधिक विषयों मे अध्ययन करने की आजादी प्रदान करें. उक्त मत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के उपाध्यक्ष प्रो. देवराज ने व्यक्त किए. वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मुंबई विश्वविद्यालय के कविवर्य कुसुमाग्रज मराठी भाषा भवन में आयोजित चॉईस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम कार्यशाला के उद्घाटन पर मुख्य वक्तव्य दे रहे थे.

शुक्रवार को संपन्न हुए उद्घाटन समारोह में मंच पर मुंबई विश्वविद्यालय के कुलपती डॉ. राजन वेलूकर, महात्मा गांधीअंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, सीबीसीएस के विषय विशेषज्ञ प्रो. श्रीमन नारायण तथा प्रो. एम. पी. महाजन, मुंबई विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. नरेश चंद्र उपस्थित थे. इस कार्यशाला में महाराष्ट्र, गोवा, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ तथा बिहार इन छ राज्यों के कुलपति, कुलसचिव तथा वरिष्ठ प्रोफेसरों समेत दोसौसे अधिक प्रतिनिधी उपस्थित हुए.

प्रो. देवराजने सीबीसीएस की विस्तार से व्याख्या करते हुए बदलते शैक्षणिक परिदृश्य में विद्यार्थियों के लिए उसकी आवश्यकता को लेकर अपने वक्तव्य में कहा की, 'नेशनल क्वालिफिकेशन कमिशन' ने शिक्षा में समरूपता लानेपर बल दिया है और इसे अमलीजामा पहनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान

आयोगने सीबीसीएस प्रणाली के माध्यम से छात्रों को अपनी रूची के विषय पढने आजादी दी है. इस प्रणाली में शिक्षकको ही मुख्य आधार माना गया है. उच्च शिक्षा के पाठयक्रम बनाने एवं लागू करने की पूरी जिम्मेदारी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कुलपतियों पर सौंपी है. आयोग केवल पॉलिसी बनाने का काम करता है. यूजीसी चाहती है कि हमारी शिक्षा प्रणाली और शिक्षक भी जवाबदेही बने ताकि उच्च शिक्षा के माध्यम से छात्रों मे मूल्यों का संचार हो और उन्हे करिअर बनाने के लिए उनमे सक्षमता और उत्कृष्टता विकसित हो. शिक्षकों को चाहिए कि वे गुगल पर आश्रित होने के बजाय आदर्श गुरू बने. उन्होने कहा की, सीबीसीएस पूरे देशभर के शिक्षा संस्था मे लागू करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृती इराणीने पहल कर इसे शिक्षण के क्षेत्र के लिए एक महत्वाकांक्षी निर्णय बनाया है. इसके तहत देशभर में कार्यशालाएं आयोजित कर सीबीसीएस के महत्व को लेकर शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है.

उद्घाटन समारोह में प्रो. गिरीश्वर मिश्रने कहा की, छात्रों को करीअर चुनने के लिए सीबीसीएस एक उपयोगी विकल्प है. उन्होंने अपने विश्वविद्यालय का हवाला देते हुए कहा की, हम अंतर–अनुशासित पाठयक्रम के माध्यमसे छात्रों को अनेक विषय पढने की स्वतंत्रता दे रहे हैं. शिक्षा की व्यवस्था को अधिक से अधिक लचिली बनाते हुए छात्रों को क्या चाहिए इसे ध्यान मे रखते हुए ज्ञान के साथ साथ कौशल विकास छात्रों मे पैदा करना चाहिए और छात्रों को इम्पॉवर्ड बनाने के लिए सीबीसीएस को अपनाना चाहिए. उन्होंने बेचलर ऑफ वोकेशनल और सामुदायिक महाविद्यालय की संकल्पना का संदर्भ देते हुए विद्यार्थियों को रोजगारक्षम और सक्षम बनाने की बात कही. उन्होंने विश्वविद्यालय में हिंदी माध्यम से फिल्म एवं थिएटर, जनसंचार, अनुवाद, स्त्री अध्ययन, अहिंसा, भाषा और साहित्य तथा दो वर्षीय बी. एड. जैसे अनोखे और छात्रों को करीअर के लिए खडे करने वाले पाठयक्रम का जिक्र अपने व्याख्यान मे किया.

मुंबई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजन वेलूकरने कहा कि पिछले तीन दशकोंसे शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, हमें चाहिए कि नई प्रौदयोगिकी का इस्तेमाल कर छात्रों को उनके विकास के लिए अध्यापन की सुविधा दी जाए. इस अवसर पर प्रतिकुलपति डॉ. नरेश चंद्र ने भी अपनी बात कही. उद्घाटन समारोह का संचालन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं कार्यशाला के संपर्क अधिकारी संजय भास्कर गवई ने किया तथा आभार शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता अरबिंदकुमार झा ने माना.

कार्यशाला के दूसरे सत्र में प्रो. एच. देवराज, प्रो. एम. पी. महाजन, डॉ. श्रीमन नारायण ने सीबीसीएसके बारे में चर्चा की तथा उपस्थितों के सवालोंका समाधान भी किया.

कार्यशाला मे यूजीसी के निदेशक अमित शुक्ला, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उपसचिव सूरत सिंग, यूजीसी क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल के उपसचिव डी. एस. चौहानसमेतछ राज्योंके कुलपति, प्रतिकुलपति, वरिष्ठ प्रोफेसर, नेशनल स्किल डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन के पदाधिकारी प्रमुखता से उपस्थित थे. प्रारंभ मे मंचासीन अतिथियों का स्वागत हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे, हिंदी अधिकारी राजेश यादव तथा संजय तिवारी, पंकज पाटील, मनोज ठाकूर, सुधीर ठाकूर, आलोक आदिने पुष्पगुच्छसे किया.

जनसंपर्क अधिकारी
(बी. एस. मिरगे)